eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता

डॉ० रंजना सिह[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, बद्री विशाल पीजी कॉलेज फर्रुखाबाद उ0प्र0

Received: 20 August 2025 Accepted & Reviewed: 25 August 2025, Published: 31 August 2025

Abstract

हमारा देश सांस्कृतिक रूप से एक समृद्धशाली देश रहा है। इसके सांस्कृतिक विकास के पथ निर्माण का कार्य हमारी ज्ञान परंपरा करती रही है। भारत की ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। यह ज्ञान परंपरा केवल अतीत की स्मृति ही नहीं, अपितु आज के समाज के लिए एक जीवंत और मार्गदर्शक विचारधारा हैस आज आधुनिक समाज में जहां तकनीकी प्रगति तीव्र गति सी हो रही है, वहीं नैतिकता, जीवन मूल्य, पर्यावरण संतुलन और मानसिक शांति जैसी अनेकों समस्याएं उत्पन्न होती जा रही है। ऐसे समय में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांत आज भी मानवता को दिशा प्रदान कर सकते हैं। यह शोध पत्र इसी दष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके प्रमुख तत्वों तथा आधुनिक समाज में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शब्दकुंजीः आयुर्वेद, शिक्षा, नैतिकता, योग, आधुनिक समाज भारतीय ज्ञान परंपरा, कर्मकांड, वैदिक ज्ञान।

Introduction

प्रत्येक समाज की अपनी एक परंपरा होती है। ये परंपराएं किसी भी समाज के व्यक्ति एवं समुदाय तथा वर्ग को एक सूत्र में बांधने का और उसे संगठित करने का काम करती है। यहां पर यह जान लेना समीचीन होगा कि परंपरा क्या है ? रंपरा, किसी व्यक्ति या समाज में प्रतिकात्मक अर्थ वाले विश्वासों, व्यवहारों और प्रथाओं का एक समूह है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता है। यह संस्कृ ति को जीवित रखने, पहचान बनाने और समाज को एक जुट रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से हम प्राचीन काल से चली आ रही रीति–रिवाजों, प्रथाओं, रुढ़ियों एवं विचार धाराओं का ज्ञान प्राप्त कर पाते है। भारत की ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। सांस्कृतिक रूप से समृद्धशाली हमारे देश के सांस्कृतिक विकास के पथ प्रदर्शन का कार्य हमारी ज्ञान परंपरा करती रही है। यह ज्ञान परम्परा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग एवं त्याग का अद्भुत समन्वय है। इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना रहा है। जैसा कि ऋग्वेद के 10.191.2 के सूत्र में उल्लिखित है कि "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवाभागं यथा पूर्वे, सजनानां उपासते" अर्थात् साथ चलने, एक स्वर में बोलने और एक दूसरे के मन को जानने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने की सामर्थ्य से युक्त हो सकता है और ऐसे युग में जीने वाले स्वयं के लिए बेहतर वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य की संकल्पना करने वाले होते है। ऋग्वेद का यह मंत्र हमें ऐसे ही सनातन दृष्टि को प्रदान करने वाला है। आज का आधुनिक समाज जहां तकनीकी विकास और भौतिक प्रगति की ऊंचाइयों पर है, वहीं जीवन –मूल्यों ,पर्यावरणीय संकट, मानसिक तनाव और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियां भी है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा पुनः एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करती है,जो विज्ञान और आध्यात्म, व्यक्ति और समाज तथा विकास और नैतिकता के बीच संतुलन स्थापित कर सकती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यः प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य अत्यंत समृद्ध, व्यापक और बहुविध रहा है। इसकी शुरुआत वैदिक काल से मानी जाती है, जहां ज्ञान की मुख्य धारा श्रुति परंपरा के माध्यम से विकसित हुई। वहीं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद जैसे ग्रंथों ने जीवन, प्रकृति, यज्ञ, नैतिकता और सामाजिक संरचना के मूल सिद्धांत स्थापित किए। वेदांगो–शिक्षा ,छंद, निरुक्त, व्याकरण, ज्योतिष और कल्प–ने भाषा, उच्चारण ,खगोल और अनुष्ठानों को वैज्ञानिक रूप दिया। आगे चलकर उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, चेतना और जीवन दर्शन पर गहन विमर्श हुआ, जिससे भारतीय दर्शन की छह आस्तिक प्रणालियों जैसे सांख्य ,योग, न्याय, वैशेषिक ,मीमांसा और वेदांत का विकास हुआ। इस परंपरा को बौद्ध और जैन विचारधाराओं ने और अधिक वृहद बनाया ,जहां तर्क, करुणा, मध्यम मार्ग ,अहिंसा और नैतिक जीवन को विशेष महत्व दिया गया। नालंदा ,तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय ने ज्ञान –विज्ञान को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल दर्शन तक सीमित नहीं रही, बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी में भी विशाल योगदान दिया। आयुर्वेद के चरक और सुश्रुत, गणित के आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त तथा धातु विज्ञान के उन्नत उदाहरणों ने भारत की वैज्ञानिक दृष्टि को विश्व में अद्वितीय बनाया।

एक ओर रामायण ,महाभारत, पुराण, नाट्यशास्त्र और संस्कृत साहित्य ने सांस्कृतिक, नैतिक और कलात्मक विरासत को समृद्ध किया, वही गुरुकुल और आश्रम प्रणाली ने शिक्षा के साथ–साथ व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण को भी महत्व दिया। मध्यकाल में भक्ति और सूफी आंदोलनों ने ज्ञान को भावनात्मक, आध्यात्मिक और लोकजीवन से जोड़ कर सामाजिक समरसता को बल दिया। आधुनिक काल में विवेकानंद, राजा राममोहन राय ,दयानंद और गांधी जैसे विचारकों ने प्राचीन भारतीय ज्ञान को नई दृष्टि दी और उसे आधुनिकता के साथ समन्वित किया। इस प्रकार प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिक या धार्मिक विचारों तक सीमित नहीं है ,बल्कि जीवन के हर क्षेत्र जैसे विज्ञान, दर्शन, कला ,नैतिकता ,समाज और संस्कृति को एक साथ समेटने वाली समग्र और जीवंत परंपरा है, जिसने भारतीय सभ्यता को एक विशिष्ट सतत और सार्वभौमिक पहचान प्रदान की।

भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रमुख तत्वः भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यन्त विस्तृत, बहुआयामी और सहस्त्राब्दियों से विकसित होती आई सांस्कृतिक – बौद्धिक धरोहर है, इसके प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं।

1– **समग्र एवं एकीकृत दृष्टिकोणः** भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञान को खंडित विषयों जैसे विज्ञान, कला, दर्शन, आध्यात्मिकता के बजाय एक एकीकृत संपूर्ण के रूप में देखती है। इसका उद्देश्य जीवन के प्रति एक संतुलित और मूल्य आधारित दृष्टिकोण प्रदान करना है।

2– गुरु–शिष्य परंपराः ज्ञान का हस्तांतरण मुख्य रूप से गुरु – शिष्य परंपरा के माध्यम से मौखिक और व्यवहारिक रूप से होता रहा है। इस प्रणाली ने ज्ञान के संरक्षण और अगली पीढ़ियों तक उसे प्रभावी ढंग से पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3– अनुभवजन्य एवं व्यवहारिक ज्ञानः भारतीय ज्ञान परंपरा अनुभवों पर आधारित थी तथा इस परंपरा में व्यावहारिकता पर बल दिया जाता था। यह परंपरा अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठिन विश्लेषण से विकसित हुई है। ज्ञान केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि व्यवहारिक उपयोगिता पर भी जोर देता है, ताकि इसका स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार उपयोग किया जा सके।

4– नैतिकता एवं मूल्य आधारित शिक्षा : भारतीय ज्ञान प्रणाली में नैतिकता और नैतिक मूल्यों को गहराई से समाहित किया गया हैं। इसका उद्देश्य व्यक्ति का चरित्र निर्माण और उसे समाजोपयोगी बनाना है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

5– प्रकृति के साथ सामंजस्यः भारतीय ज्ञान परंपरा व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बंध को बढावा देती है। आयुर्वेद एवं योग जैसे क्षेत्रों में स्वास्थ्य को प्रकृति से जुड़कर प्राप्त करने पर जोर दिया गया है।

6– विविध विषयः इसमें 18 प्रमुख विद्याएं जिनमें सैद्धांतिक विषय जैसे चार वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, न्याय और मीमांसा तथा 64 कलाएं जैसे व्यावहारिक या व्यावसायिक अनुशासन और शिल्प शामिल है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को कवर करती है।

7– **शोध और अन्वेषणः** भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध एक अनिवार्य तत्व के रूप में निहित है, जिसमें अन्वेषण और विश्लेषण के माध्यम से ज्ञान का सृजन और विकास किया गया। भारतीय ज्ञान परंपरा के ये सभी तत्व मिलकर इस परंपरा को एक समृद्ध और गतिशील प्रणाली बनाते है, जो आज भी समकालीन चुनौतियों का समाधान प्रदान करने में प्रासंगिक है।

आधुनिक समाज में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकताः प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की स्मृति नहीं, अपितु आज के समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा में आध्यात्मिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक मूल्यों का अदभुत भंडार है, जो आज के समय में भी बहुत महत्वपूर्ण है।

1.आध्यात्मिकता और मानसिक शांतिः आधुनिक समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, तनाव, अकेलापन और मानसिक अस्वस्थता के बीच भारतीय ज्ञान परंपरा पहले से भी अधिक प्रासंगिक हैं। योग, ध्यान और प्राणायाम जैसे साधन मन को शांत और एकाग्र बनाते हैं, जबकि भगवत गीता का कर्म योग और ज्ञान योग तनाव कम करने और सही दृष्टिकोण बनाने में मदद करते है। आयुर्वेद संतुलित जीवन शैली और मानसिक संतुलन का मार्ग दिखाता है। "वसुधैव कुटुंबकम'' जैसी भारतीय धारणाएं करुणा और सकारात्मकता को बढ़ाकर मानसिक शांति का आधार बनाती है। इस प्रकार भारतीय परंपरा आधुनिक जीवन में मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक विकास दोनों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

2. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय दष्टिकोणः आज की शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान आधारित दृ ष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सार्थक है। आज के समय में जब शिक्षा अक्सर केवल रोजगार केंद्रित और प्रतिस्पर्धात्मक बनकर रह गई है, भारतीय दृष्टि उसमें मानवीय और नैतिक मूल्यों का संतुलन स्थापित करती है। यह 'विद्या ददाति विनयम' जैसे सिद्धांतों पर आधारित होकर शिक्षार्थी में विनम्रता ,करुणा ,आत्मनियत्रण, पर्यावरण – सम्मान और जिम्मेदारी जैसे गुणों को विकसित करती है।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचारः भारतीय ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं है; यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक सोच और नवाचार को विकसित करने में भी आधुनिक समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। इसका कारण है कि भारतीय ज्ञान तर्क, प्रमाण और जिज्ञासा पर आधारित सोच को बढ़ावा देती है। प्राचीन भारतीय दर्शन गणित, आयुर्वेद और खगोल विज्ञान जैसी परंपराएं अनुसंधान व विश्लेषण की वैज्ञानिक मानसिकता को मजबूत करती है। योग और आयुर्वेद आज भी नए वैज्ञानिक शोध और नवाचार के प्रेरक बन रहे हैं। साथ ही, प्रकृति आधारित और सतत् दृष्टिकोण आधुनिक तकनीक व पर्यावरण –अनुकूल नवाचारों को नई दिशा देते है। इस प्रकार भारतीय परंपरा आधुनिक विज्ञान और नवाचार दोनों के लिए प्रेरणा स्रोत है

4. सांस्कृतिक मूल्य और नैतिकताः आधुनिक समाज में तेज गति, तकनीकी विकास और भौतिकवादी जीवन शैली के कारण आम जनमानस के नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक चेतना पीछे छुटती जा रही है। ऐसे

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

समय में प्राचीन भारतीय परंपरा की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने सदैव धर्म, सत्य, अहिंसा, करुणा और शील जैसे मूल्यों को जीवन का आधार माना हैं। जब समाज में प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ रहे हैं, तब यह मूल्य हमें समानता ,न्याय, नैतिकता और और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना बनाए रखने में मदद करते हैं। इस प्रकार प्राचीन भारतीय परंपरा आधुनिक समाज में केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि नैतिकता सामाजिक सद्भाव और व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन है।

5. प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता: भारतीय परंपरा सदियों से प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं, अपितु जीव और जीवन का अभिन्न अंग मानती आई हैं। वेदों, उपनिषदों और पुराणों मे जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और आकाश को पवित्र तत्व माना गया हैं, जिनका सम्मान करना मानव का धर्म है। यही दृष्टिकोण आधुनिक समय में पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की नींव बन सकता है। आज जब औद्योगिकीकरण, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन बढ़ रहा है, भारतीय परंपरा हमें संतुलित जीवन, संसाधनों का संरक्षण और पर्यावरण के साथ सामंजस्य सिखाती है। योग और आयुर्वेद जैसी प्रणाली भी प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने और मानव जीवन को संतुलित रखने की शिक्षा देती है। "वृक्षारोपण, जल संरक्षण, पर्वतों और नदियों का सम्मान" जैसी परंपराएं आज के हरित आंदोलन और पर्यावरण जागरूकता के लिए आदर्श बन सकती है।

समकालीन चुनौतियां और संभावनाएं :

चुनौतियां:

आधुनिक समाज में भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने में अनेकों चुनौतियां हैं :

1. भौतिकतावादी और उपभोक्तावादी प्रवृत्ति: 21वी सदी में वैश्वीकरण, तकनीकी उन्नति और पूंजीवाद की मजबूती ने एक ऐसी उपभोक्ता– संस्कृति विकसित की है, जिसमें व्यक्ति की पहचान, प्रतिष्ठा और जीवन मूल्य वस्तुओं के उपभोग और भौतिक संपन्नता से गहराई से जुड़ने लगे है सयह प्रवृति न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर रही है। भौतिकतावादी एवं उपभोक्तावादी दृष्टिकोण के कारण व्यक्ति की जीवन प्राथमिकताएं मानवता और आदर्शवादिता से परिवर्तित होकर भौतिक वस्तुओं, धन, प्रतिष्ठा और संपत्ति के अधिग्रहण में केंद्रित होती जा रही है।

2. पारंपरिक ज्ञान का अवमूल्य: वर्तमान समय में आधुनिक विज्ञान, तकनीक और बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव के कारण पीढ़ियों से संचित लोक–ज्ञान, अनुभवजन्य विधियां और सांस्कृतिक परंपराएं कमतर मानी जाने लगी है। औपनिवेशिक सोच और वर्तमान शिक्षा प्रणाली भी स्थानीय ज्ञान को "अवैज्ञानिक" या "पुराना" मानकर उसके महत्व को घटाती है। इसके परिणाम स्वरूप न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान कमजोर होती है ,बल्कि पर्यावरणीय संतुलन और समुदायों की आत्मनिर्भरता भी प्रभावित होती है। कृषि, चिकित्सा ,वास्तुकला और सामाजिक संगठन में पारंपरिक तरीके अक्सर अधिक टिकाऊ, पर्यावरण हितैषी और जमीनी हकीकत से जुड़े होते हैं, लेकिन उपेक्षा के कारण वे धीरे–धीरे लुप्त हो रहे हैं।

3. **आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का सीमित समावेश:** आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश अभी भी बहुत सीमित रूप में दिखाई देता है। भारत की प्राचीन ज्ञान व्यवस्था – वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष ,दर्शन, साहित्य , गणित ,खगोल शास्त्र एवं कला विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध धरोहरों में से एक है ,किंतु वर्तमान शिक्षा पद्धति पश्चिमी मॉडल से प्रभावित है। आज स्कूल

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

और विश्वविद्यालय स्तर पर भारतीय ज्ञान से जुड़े विषय तो शामिल किए गए हैं, परंतु वे अक्सर सहायक या वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाएं जाते हैं। इसमें गहन अध्ययन, शोध और व्यवहारिक उपयोग के अवसर बहुत सीमित है। संस्कृत और अन्य पारंपरिक भाषाओं के ज्ञान का अभाव मूल ग्रन्थों की समझ को कठिन बना देता है। परिणाम स्वरुप विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक जड़ों, नैतिक मूल्यों और वैज्ञानिक विरासत से पर्याप्त रूप से परिचित नहीं हो पाते है।

4. युवाओं में सांस्कृतिक विरक्तिः भारतीय ज्ञान परंपरा के अभाव में युवाओं में सांस्कृतिक विरक्ति आज के समय की एक गंभीर सामाजिक समस्या बनती जा रही है। आधुनिक तकनीक ,पश्चिमी संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, व्यस्त जीवन शैली और शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों की कमी के कारण युवा अपनी भाषा, परंपराओं ,कला और रीति–रिवाज से धीरे–धीरे दूर होते जा रहे है। पारिवारिक वातावरण में भी संस्कारों और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति रुचि कम होने से यह दूरी और बढ़ती जा रही है। इसके परिणाम स्वरुप युवाओं में पहचान का भ्रम, सामाजिक बंधनों की कमजोरियों और लोक परंपराओं का क्षय दिखाई देता है।

संभावनाएंः भारतीय ज्ञान परंपरा अनुभव और विश्लेषण पर आधारित होने के कारण समकालीन चुनौतियों के समाधान के लिए एक समग्र और समावेशी संभावनाएं प्रस्तुत कर सकती हैः

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली को शैक्षिक पाठयक्रमो में सम्मिलित किया जा सकता हैं।
2. योग, आयुर्वेद, खगोल और संस्कृत अध्ययन को बढ़ावा दिया जा सकता हैं।
3. डिजिटल माध्यमों से प्राचीन ग्रन्थों का पुनर्प्रकाशन किया जा सकता हैं।
4. वैश्विक मंच पर भारतीय ज्ञान और विज्ञान को प्रचारित और प्रसारित कर सकते है।
5. भारतीय ज्ञान परंपरा के पारंपरिक ज्ञान को पुनर्जीवित कर उसका सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक महत्त्व स्थापित करने का प्रयास कर सकते है।
6. वर्तमान में भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित दर्शन, जीवनदृष्टि, सामाजिक मूल्यों और व्यवहारिक सिद्धांतों के माध्यम से भौतिकतावाद और उपभोक्तावाद की बढ़ती प्रवृत्ति को संतुलित और सुधारा जा सकता है।

निष्कर्षः भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत का गौरव नहीं, अपितु वर्तमान और भविष्य के लिए दिशा प्रदान करने वाली एक जीवन धारा है। आधुनिक समाज में इसकी प्रासंगिकता इसलिए है, क्योंकि यह हमें संतुलित, टिकाऊ, नैतिक एवं समरस समाज के निर्माण का मार्ग दिखाती है।

संदर्भ सूचीः

1. आचार्य, के.(2019), भारतीय दर्शन का इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, पृ. 45–102 .
2- Bhattacharya,N.(2015), Revisiting Nalanda and Takshshila: Centres of Ancient Learning, Indian Historical Review, Vol-42(1) pp.60-75.
3- Mishra, R.(2021), Ancient India Knowledge System and Modern Education, Saga Publications, pp.57-93.
4- Nationa Education Policy (2020), Ministry of Education] Government of India,pp.29-35
5- Patel,V.(2017), Environmental Ethics in Vedic TeÛts, Journal of India Philosophy, Vol.45(2),pp.33-49 .
6- Radhakrishnan (2018) Indian Philosophy, Oxford University press, Vol-1, pp.211-260 .
7. शर्मा, एस.(2020), भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिकता, भारती प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 88–134
8- World Health Organization (2022) Integrating Ayurveda in Global Health Systems, Wh Publications, pp.45-62 .